शुद्धिपत्र

पृ.	पं.	अशुद्धि	शुद्धि
३	१५	उभयरुप कारणोंकी	उभयरुप अन्य कारणोंकी[1]
६४	३०	मुखविस्तारसे करना	मुखविस्तारसे गुणित करना
६५	१०	परुवणाए पदं	परुवणाए उववादपदं
६६	१२	प्ररुपणाके समान	प्ररुपणा उपपाद पदकेप्रति
७४	२३	पर्याप्त मनुष्य	मनुष्य पर्याप्त[2]
११७	१८	द्वारा आये हुए दोष प्रसंगका प्रतिषेध कर दिया गया है।	द्वारा प्रसज्याभावके प्रतिषेध का निराकरण कर दिया है।
११७	२३	वेदियोंमें इस पदके प्रव्य निर्देशकी भी इसी	वेदियोंमें यह पद द्रव्य निर्देश पर है। अत: इसका इसी
१२०	१	तीसु	तिसु
१४७	५	आयाम कहा नहीं। चौदह	आयामके चौदह
१५०	२१	कर पुन:	कर जो शेष रहे उसे पुन:
१५३	२७	द्वीपके समुद्रके	द्वीप और समुद्रके
१५६	९	उपर्युक्त	पूर्वोक्त
१८१	२६	प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टी और असंयत	प्रकार असंयत
१८२	१८	एक योजन	एक हजार योजन
१८४	११	तिर्यंच योनिमती	तिर्यच योानिनी
१९०	१७	किया है। किन्तु	किया है। केवल इतनेही क्षेत्रसे कम नही है। किन्तु
१९४	५	' ४'	' ५'
१९६	१९	तीसरा है	तक तीन हो जाते हैं,
२१३	१३	शेष तिर्यंच गतिके	शेष गुणस्थानवाले तिर्यंच गतिके
२१३	१३	क्षेत्र ओघके	क्षेत्र तिर्यंच ओघके
३१४	१	पडवादीण	पईवादीण
३१४	१२	प्रतिपादका शब्द पाये	प्रदीपादि पाये
३१५	१८	काल पुद्गलोंके	काल, जीव और पुद्गलोंके

----

१. आगममें सर्वत्र मनुष्योंके मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त मनुष्यिनी और मनुष्य अपर्याप्त ये चार भेद किये गये हैं। अत: आगे जहाँ भी इस संज्ञाओंमें फरक किया गया हो वहाँ इसी विधिसे सुधार कर स्वाध्याय करना चाहिये।

२. आगममें उक्त शब्दका अर्थ विवक्षित है।

पृ.	पं.	अशुद्धि	शुद्धि
३१५	१८	उत्पन्न होता	व्यज्यमान होता
३१५	१८	और पुद्गलादिका	और जीव तथा पुद्गलोका
३१७	२०	पुद्गल एवं धर्मादिक द्रव्योंके	पुद्गल द्रव्योंके
३१७	२२	आदि वर्तनारहित चिर अथवा क्षिप्र की अर्थात् परत्व और अपरत्वकी, कोई सत्ता नहीं है। वह वर्तना भी पुद्गल द्रव्यके बिना आलम्बन नहीं होती है, इसलिए कालद्रव्य पुद्गलके निमित्तसे हुआ कहा जाता है ॥९॥	चिर अथवा क्षिप्र यह ज्ञान प्रमाणके बिना नहीं होता और वह प्रमाण पुद्गल द्रव्यके परिणामके बिना नहीं होता, इसलिए वह काल पुद्गलके सापेक्ष उत्पन्न होता है ॥९॥
३२५	१५	आनेवाले	आये हुए
३३९	९	निरुपणा	निरुपणा
३३९	१९	कि क्षण होनेवाली सभी राशियोके प्रतिपक्षसहित पाई जाती है।	क्योंकि सभी राशियाँ प्रतिपक्षसहित पाई जाती हैं।
३४३		तो प्रमत्त	तो उसका प्रमत्त
३४६	४	पक्खसाहणत्तेहि	पक्खसाहणत्ते हि
३५३	१६	अन्य भी अप्रमत्तसंयत जीव	अन्य अप्रमत्तसंयत जीवोंको भी
३५३	१६	करना	कराना
३६२	१६	सम्यग्दृष्टी	सम्यग्मिथ्यादृष्टी
३६२	३	पडिविज्जय	पडिवज्जिय
३६८	७	तण्णि	तिण्णि
३६९	१६	करना नहीं है।	करना सम्भव नहीं है।
३६८	१७	लब्ध्यपर्याप्तकोंमें	अपर्याप्तकोंमें
३६८	१८	क्योंकि लब्ध्यपर्याप्त	क्योंकि अपर्याप्त अर्थात् निवृत्य पर्याप्त
३७१	१६	काल ओघके	काल तिर्यंच ओघके
३७६	३	एगजीवण्णदर	एगजीवसस अण्णदर
३७६	९	णाणाजाव	जाणाजीवं
३७६	१७	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	सम्यग्मिथ्यादृष्टि एक जीवके
३८४	६	लंतव	लांतव
३८५	७	मीच्छादिट्ठी	मिच्छादिट्ठी
४०२	१	अणप्पियद	अणप्पिद
४१८	५	तंधा ज	तं जधा

४५७	१	सब्भदे	लब्भदे
४७६	११	अकाट्टिम	अकिट्टिम
४८५	४	वादेन	वादेण